हिंदी

leverage edu

रस हिंदी व्याकरण

रस की परिभाषा, भेद उदहारण सहित।

जिस काव्य को पढ़ने, सुनने से हमे जो आनंद की प्राप्ति होती है, उसे ही रस कहते है |

रस की परिभाषा, अंग, प्रकार और स्थायी भाव

काव्य को पढ़ने या सुनने से जिस आनंद की अनुभूति होती हैं उसे रस कहाँ जाता हैं।

रस के अंग

1. स्थायी भाव
2. विभाव
3. अनुभाव
4. संचारी भाव

रस	स्थायी भाव
श्रृंगार रस	रति
हास्य रस	हास
करुण रस	शोक
वीर रस	उत्साह
अदभूत रस	आश्चर्य , विस्मय
भयानक रस	भय
रौद्र रस	क्रोध
वीभत्स रस	जुगुप्सा
शांत रस	निर्वेद या निर्वृती
वात्सल्य रस	रति
भक्ति रस	अनुराग

The picture can't be displayed.

रौद्र रस

इसका स्थायी भाव क्रोध होता है जब किसी एक पक्ष या व्यक्ति द्वारा दुसरे पक्ष या दुसरे व्यक्ति का अपमान करने अथवा अपने गुरुजन आदि कि निन्दा से जो क्रोध उत्पन्न होता है उसे रौद्र रस कहते हैं इसमें क्रोध के कारण मुख लाल हो जाना, दाँत पिसना, शास्त्र चलाना, भौंहे चढ़ाना आदि के भाव उत्पन्न होते हैं

उदाहरण :

उस काल मरे क्रोध के तन काँपने उसका लगा
मानो हवा के जोर से सोता हुआ सागर जगा

रौद्र रस

जिस काव्य रचना को पढ़कर या सुनकर हृदय में क्रोध के भाव उत्पन्न होता हैं वहां पर रौद्र रस होता हैं।

उदाहरण :- श्री कृष्ण के सुन वचन, अर्जुन क्रोध से जलने लगे ।
सब शोक अपना भूल कर, करतल युगल मलने लगे ।।

स्थाई भाव	:-	क्रोध
संचारी भाव	:-	मोह, उग्रता, आशा, हर्ष, स्मृति, भावेग, चपलता, मति, उत्सुकता, अमर्ष आदि।
अनुभाव	:-	आँख लाल होना, होठों का फड़फड़ाना, भौंटों का रेढा होना, दांत पीसना
उद्दीपन विभाव	:-	अनिष्ट कार्य ,निंदा ,कठोर वचन , अपमानजनक वाक्य।
आलम्बन विभाव	:-	अपराधी व्यक्ति, शत्रु, विपक्षी, दुराचारी, लोक पीड़ा, अत्यचरी, अन्यायी।

वीभत्स रस की परिभाषा

काव्य को सुनने पर जब घृणा के से भाव की अनुभूति होती है तो इस अनुभूति को ही वीभत्स रस कहते हैं। अन्य शब्दों में वीभत्स रस वह रस है, जिसमें घृणा का भाव होता है अथवा जिसका स्थायी भाव जुगुप्सा होता है।

वीभत्स रस के उदाहरण

आंतन की तांत बाजी, खाल की मृदंग बाजी।
खोपरी की ताल, पशु पाल के अखारे में।।

स्थायी भाव: जुगुप्सा।

आलंबन (विभाव): कोई भी वस्तु, चरित्र, घटना या विचार आदि जिससे सामना होने पर घृणा उत्पन्न हो जाए जैसे कोई सड़ी-गली वस्तु या कोई निर्मम घटना आदि।

उद्दीपन (विभाव): सडन, गंदगी, बदबू, स्मृति, घृणा योग्य अनुभूति या चेष्टा।

अनुभाव: आँखें मींच लेना, देह समेट लेना, स्वयं को पीछे कि ओर हटाना या ले जाना, नाक सिकुड़ना, मुंह सिकुड़ना, कंधे उचकाना या ऊपर कि ओर धकेलना, पीछे की ओर देखना या पलट जाना आदि।

संचारी भाव: उप्काई आना, एक प्रकार की चिंता का होना, अप्रसन्नता, उद्दीपन के त्याग की अनुभूति।

श्रृंगार रस

जहां नायक और नायिका की अथवा महिला पुरुष के प्रेम पूर्वक श्रेष्ठाओं क्रिया-कलापों का श्रेष्ठाक वर्णन होता हैं वहां श्रृंगार रस होता हैं।

उदाहरण :- राम को रूप निहारत जानकी,
कंगन के नग की परछाई।
याते सबै सुध भूल गई,
कर टेक रही पल टारत नाही।।

व्याख्या :- प्रस्तुत पंक्तियों में तुलसीदास जी कहते हैं कि माता सीता प्रभु श्रीराम का रूप निहार रही हैं क्योंकि दूल्हे के वेश में श्रीराम अत्यन्त मनमोहक दिख रहे हैं। जब अपने हाथ में पहने कंगन में जड़ित नग में प्रभु श्रीराम की मनमोहक छवि की परछाई देखती हैं तो वो स्वयं को रोक नही पातीं हैं और एकटक प्रभु श्रीराम की मनमोहक छवि को निहारती रह जाती हैं।

स्थाई भाव	:-	रति
संचारी भाव	:-	हर्ष, जड़ता, निर्वेद, आवेग, उन्माद, अभिलाषा आदि।
अनुभाव	:-	अवलोकन, स्पर्श, आलिंगन, रोमांच, अनुराग आदि हैं।
उद्दीपन विभाव	:-	नायक-नायिका की चेष्टाए हैं।
आलम्बन भाव	:-	प्रकति, पक्षी के कुंजन, सुंदर-सुंदर उपवन, वसंत ऋतू आदि।